द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य का अध्ययन

द्वितीय अध्याय

2.0 भूमिका

साहित्य के पुनरावलोकन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित पुस्तकें, ज्ञानकोष पत्र पत्रिकाएं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं जिनसे शोध के दौरान अनुसंधानकर्ता को अपनी शोध समस्या का चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना एवं कार्य आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

साहित्य का पुनरावलोकन एक सृजनात्मक कार्य है अतः शोधकर्ता को शोध अध्ययन से पूर्व विधिवत् रूप से साहित्य पुर्ननिरीक्षण एकत्र करना चाहिए।

2.1 साहित्य पुनरावलोकन का महत्व तथा योगदान

1. शोध के गुणात्मक तथा भावात्मक विश्लेषण में शोधकर्ता को नई दिशा देना।
2. शोध हेतु विचार व्याख्या तथा परिकल्पनाएं प्रदान करना जो समस्या चुनाव में उपयोगी है।
3. शोध समस्या के समाधान हेतु उचित विधि प्रक्रिया तथ्यों के साधन तथा सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देना है।
4. परिणामों के विश्लेषण, निष्कर्षों के तुलनात्मक अध्ययन को निर्धारित करना है।
5. अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है व संबंधित क्षेत्र में हुए कार्यो की सूचना देता है।
6. शोधकर्ता की निपुणता तथा सामान्य पांडित्य के विकास में सहायक।

शोध से संबंधित साहित्य इस शोध की समस्या से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष

रूप से संबंधित है। इसे निम्न दो भागों में बांटा गया है।

2.2 पूर्व में किये गये शोध

मुत्थैया, नायडू, तथा रंगा (1974) में अपने शोधकार्य बाल विकास के कार्यक्रमों का मूल्यांकन में आंध्रप्रदेश के बालकों के विकास के लिए किए गए कार्यो का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के परिणाम इस प्रकार हैं:- स्वास्थ्य कार्यक्रम व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहें हैं गांवों में उन्हें जो सुविधा प्राप्त हो रही है वे उसका ठीक ढंग से उपयोग कर रहे हैं। महिला मंडल एवं बालबाड़ियां ठीक से कार्य नहीं कर रही हैं।

2. मुरली धरन (1974) के द्वारा पूर्व प्राथमिक विद्यालयों और प्राथमिक विद्यालयों की निरन्तरता का निरीक्षणात्मक अध्ययन किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों के वे बालक जो बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा को ग्रहण किये प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश करते हैं उन्हें अधिक परेशानी होती है वे या तो ड्रापआउट हो जाते हैं या दोबारा उसी कक्षा में पढ़ते हैं। वे बालक जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण किये थे, जिनकी उम्र 5 वर्ष 11 महीने थे बहुत अच्छे थे भाषा एवं बौद्धिक विकास में। उन बच्चों से जिन्होंने पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण नहीं की थी और कक्षा एक में थे व 6 वर्ष 6 माह के थे। वे बालक जो बालवाड़ी का अनुभव रखते थे सामान्य व्यवहार तथा उपलब्धि में जबकि वे नहीं जो बालवाड़ी का अनुभव नहीं रखते थे।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के द्वारा

एकीकृत बाल विकास परियोजना को ई.सी.सी.ई. का सबसे बड़ा कार्यक्रम कहा गया है इससे सभी आँगनवाड़ियां सम्मिलित हैं इनके कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के लिए एक माह तक आँगनवाड़ी में प्रशिक्षण देना चाहिए। प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न शिक्षण सामग्री

का विकास किया जाना चाहिए। प्रत्येक आँगनवाड़ी में बालकों के लिए चित्रों की पुस्तकें, खेलसामग्री, पोस्टर आदि को समय-समय पर बदला जाना चाहिए। इन्हें दुबारा बनाना चाहिए। इन प्रशिक्षणार्थियों तथा पर्यवेक्षकों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए रिफ्रेशर कोर्स करवाना चाहिए ये कोर्स प्री सर्विस ट्रेनिंग या इन सर्विस ट्रेनिंग के रूप में हो सकते हैं।

4. तारापुर, देशपांडे तथा पंडसे (1986) के द्वारा सामेकित बाल विकास सेवा के अनौपचारिक घटक का अध्ययन किया गया।

इसमें 154 आँगनवाड़ियों का चयन किया गया। इसमें हायर रेटिंग आँगनवाड़ी तथा लोअर रेटिंग आँगनवाड़ियों व आई.सी.डी.एस. के अंतर्गत नआने वाले संस्थानों के कार्यो की तुलना की गई। व्यक्तिगत सूचनाएं पूर्ण रूप से गति का विकास धारणा बनाना, तत्परता कौशल, विभिन्नीकरण भाषा तथा सामाजिक कौशल आदि के द्वारा कार्यो की तुलना की गई। हायर रेटिंग आँगनवाड़ी तथा आई.सी.डी.एस. के अलावा अन्य संस्थाओं का कार्य लोअर रेटिंग आँगनवाड़ी से बेहतर रहा।

5. शेषम्मा तथा करणम (1986) ने पूर्व प्राथमिक शिक्षकों की पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसके अंतर्गत शिक्षकों की खेल के प्रति अभिवृत्ति का निर्धारण किया गया। तीन समूह 35 आँगनवाड़ी 10 नर्सरी स्कूल तथा 2 लैबोरेट्री स्कूल लिए गए। इनमें मिलने वाली खेल सुविधाओं में अंतर ज्ञात किया गया। सभी विद्यालयों के शिक्षकों ने खेल को आवश्यक माना। आँगनवाड़ी में से 97 % ने खेल को आवश्यक बताया, 80% ने रेट के खेल व आर्गनाइज्ड खेलों के प्रति रूचि दिखाई।

पूर्व प्राथमिक मूल्यांकन स्केल के अंकों के आधार पर आँगनवाड़ियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया। 25 को 'बी' श्रेणी तथा 8 को 'सी' श्रेणी प्राप्त हुई।

6. श्रीवास्तव (1987) के द्वारा बालकों के बौद्धिक विकास के पूर्व प्राथमिक विद्यालयीन कार्यक्रम का मूल्याँकन किया गया।

इस अध्ययन के लिए कर्नाटक के 7 बैंच से न्यादर्श लिया गया। इसमें 40 महिलाओं को 12 दिनों का कोर्स कराया। तथा उनकी क्रियाओं व प्राप्तियों का मूल्यांकन किया गया। निष्कर्ष इस प्रकार है कि प्रशिक्षण द्वारा कार्यकर्ताओं के ज्ञान एवं कौशल का विकास होता है तथा उनकी अभिकृति में स्वयं के तथा दूसरों के प्रति सकारात्मक परिवर्तन होता है।

7. मुरलीधरन एवं पंकजम (1988) के द्वारा पूर्व विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न प्रतिमानों का बालकों पर प्रभाव का मूल्याँकन किया गया। यह अध्ययन गांधीग्राम तमिलनाडु में किया गया। 28 बालक जो 3-5 आयु वर्ग के थे। 32 बालकों को रेडम उस विद्यालय से लिया गया जहां शिक्षकों को 2 वर्ष, 1 वर्ष, 6 माह तथा 4 माह का आँगनवाड़ी प्रशिक्षण दिया गया था। उन बालकों के बौद्धिक तथा भाषा विकास के अध्ययन में सर्वाधिक अंक आए जिनके शिक्षकों को दो वर्ष का प्रशिक्षण दिया गया था।

दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों के छात्र तथा आँगनवाड़ी के बालकों में बहुत कम अंतर आता है। अतः यह सार्थक नही है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ता यदि कुशलतापूर्वक प्रशिक्षित हो तो वे अधिक प्रभावी पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम प्रदान कर सकते हैं।

8. बीना, सुनीता एवं हंसा (1989) ने बड़ौदा आई.सी.डी.एस. ने अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक घटक का अध्ययन किया। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य था हायर और लोअर आँगनवाड़ियों के बालकों के विकास की तुलना करना तथा जो बालक आँगनवाड़ी नहीं जा रहे उनकी प्रतिभा का अध्ययन करना। 60 बालक 3-6 वर्ष के आँगनवाड़ियों से चुने गये तथा 2 वे थे जिन्हें पूर्व प्राथमिक शिक्षा नहीं

मिली थी। आँगनवाड़ियो को उच्च व निम्न श्रेणी में बांटा गया। इन श्रेणियों के कार्यकर्ताओ को बालकों की देखभाल एवं विकास के बारे में अवचेतना तथा इससे संबंधित कार्यो की तुलना की गई। दोनों ही समूहों की क्रियाओं का स्तर लगभग समान रहा तथा इन आँगनवाड़ी के बालकों की क्रियाओं में भी कोई अंतर नहीं दिखाई दिया। एक्सपोज्ड बालकों पर आँगनवाड़ी के अनुभवों को सार्थक प्रभाव रहा।

2.3 वर्तमान में किये गये शोध

9. दीपाली (1990) के द्वारा कामरूप जिले के ग्रामीण क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की समस्याओं का अध्ययन किया गया। 6 वर्ष के बच्चे एवं अभिभावकों को न्यादर्श में लिया गया। प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निम्नलिखित समस्यायें सामने आई माता एवं पारिवारिक सदस्यों का ध्यान न देना, गरीबी, नशा एवं माता–पिता का झगड़ना, गंदी भाषा का उपयोग करना जिनके कारण इनका विकास प्रभावित है।

10. खोसला (1991) के द्वारा रिफ्रेशर कोर्स इन प्री स्कूल एज्युकेशन फार आँगनवाड़ी वकर्स : एन इवेलुयेशन अध्ययन किया गया जिसमें आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को दी जाने वाली रिफ्रेशर ट्रेनिंग को लेकर अध्ययन किया गया है। उन कार्यक्रमों की प्रभाविता के बारे में अध्ययन तथा कितने कार्यक्रम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हुए। कार्यकर्ताओं की पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत अत्यधिक जानकारी ज्ञात हुई वह अधिक सहभागी साबित हुए।

वातावरण से ही संसाधनों का उपयोग कर विभिन्न गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त हुआ। माताओं व सहायक लोगों को शामिल करने से अधिक प्रभावी रहेगा अत्यधिक क्रियाकलाप व अन्य गतिविधियों के अनुपात मे वृद्धि हुई। ट्रेनिंग के बाद ही कार्यकर्ताओं को उन गतिविधि व शिक्षण सामग्री, का पता चला तथा उसने उपयोग भी किया।

11. यशोधरा (1991) ने पूर्व विद्यालय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में अभिभावकों व शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमें 115 आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को लिया गया था। जो ग्रामीण व शहरी दोनों केन्द्रों से थे। 8 पर्यवेक्षक और 345 वेनिफिशरीज। ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अंतर मुख्य बिन्दु थे। शहरी आँगनवाड़ियों के कार्यकर्ताओं में कम जॉव स्टेस था।

12. रीजनल सेन्टर (1991) द्वारा

आई.सी.डी.एस. बिहार व मध्यप्रदेश में एक अध्ययन किया आई.सी.डी. एस. कार्यक्रम की उपलब्धि व अनुप्रयोग का अध्ययन किया गया जिसमें बिहार व मध्यप्रदेश के 13 व 16 जिलों का आँगनवाड़ी को लिया गया।

आँगनवाड़ी सेन्टर घर के एक कमरे में थे व बहुत छोटे थें आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि की समस्या थी। बहुत बड़ी संख्या में पद खाली थे। शब्दों के आकार की अध्ययन करने वाली विद्या में भी शहरी व ग्रामीण में अंतर था। इसमें कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य कार्यक्रम के बारे में जानकारी न होने के कारण उनकी भूमिका सार्थक नहीं थी।

13. सेठ एवं आहुजा (1992) के द्वारा पूर्व विद्यालय के लिए निम्नतम विनिदेश नामक अध्ययन किया गया। जिसमें पूर्व प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम की कम से कम अनिवार्य आवश्कताओं का अध्ययन किया है। अनेक वर्कशाप के उद्देश्यों को देखा गया और कम से कम आवश्यकताओं को निम्नलिखित आधार पर लिया गया। भौतिक सुविधाएं साधन व सामग्री, सुरक्षा व सावधानी, प्री स्कूल स्टाफ, प्रवेश आयु, प्रवेश विधि, पूर्व प्राथमिक विद्यालयीन कार्यक्रम, रिकार्ड व रजिस्टर। हर एक किलोमीटर पर एक विद्यालय होना चाहिए। 30 बालकों के लिए कमरे की जगह 15× 20/30 होना चाहिए। पीने के पानी की सुविधा हो। भंडार करने की जगह हो। प्राथमिक उपचार

सामग्री हो। शिक्षक को कम से कम दसवी पास होना चाहिए। दो साल का प्रशिक्षण बाल शिक्षा में हो। बच्चों के मूल्याँकन पर आधारित प्रवेश विधि नहीं हो। प्री स्कूल कार्यक्रम में स्वास्थ्य व पोषण आहार को भी शामिल करना चाहिए। बच्चों के विकास व वृद्धि के रिकार्ड को रखना आवश्यक है।

14. पलैया, (1993) के द्वारा आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अविरत शैक्षिक आवश्कताओं का अध्ययन किया गया जिसमें 68 आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को लिया गया जो भोपाल के थे। साक्षात्कार लिया गया। इसके उद्देश्य थे कार्यकर्ताओं के शिक्षात्मक दायित्व, बाल स्वास्थ्य दायित्व तथा सामुदायिक उत्तरदायित्व संबंधी अवचेतना का अध्ययन तथा उनके लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण आवश्यकताओं का निर्धारण करना। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की वर्तमान एवं अपेक्षित क्षमताओं में बहुत अंतर है जिसके कारण ये कार्यकर्ता अपना कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं कर पा रहे हैं। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण मे क्रियाओं व खेल को मुख्य स्थान देना चाहिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ता अपने आपको अध्यापन व्यवसाय की श्रृंखला मानते हैं। और निहित समय पर ही आँगनवाड़ियों का संचालन करते हैं परन्तु सत्य यह है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का कार्य क्षेत्र कल्याण, सेवा और समुदाय संपर्क से जुड़ा है अतः प्रशिक्षण एवं कार्य योजना बनाते समय इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

15. सायनी एवं छिकरा (1993) के द्वारा पूर्व विद्यालय शिक्षा की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया। हिसार जिले के पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की आधारभूत संरचना तथ कक्षा के अधिगम वातावरण का अध्ययन किया। 50 विद्यालयों को रेडम्ली चुना गया। साक्षात्कार लिया गया। इन विद्यालयों में पर्याप्त सुविधा नहीं थी। शिक्षक शिक्षण सामग्री का उपयोग नहीं करते थे। थ्री आर पर जोर दिया जाता था। शिक्षक प्रशिक्षित नहीं थे।

16. दिनकर (1999) के द्वारा भोपाल में पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें भोपाल के छः पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के नर्सरी व के.जी.2 के बच्चो को लिया गया। शिक्षकों व प्राचार्यो को भी लिया। प्रश्नावली में विद्यालयों के कार्यान्वयन, शिक्षकों के उत्तरदायित्व, आधारभूत संरचना से संबंधित प्रश्न थे। इसमे प्रश्नावली तथा साथ में एक निरीक्षण सूची को शामिल किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य इन विद्यालयों के कार्यान्वयन शिक्षकों के उत्तरदायित्व, तथा आधारभूत संरचना का अध्ययन करना था।

17. भालेराव एवं देस्ती (2001) के द्वारा प्रभावी जिले में शासकीय व अशासकीय पूर्व विद्यालयों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। जिसमें 64 शासकीय एवं 36 अशासकीय विद्यालयों का रेंड्मली चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची व निरीक्षण अनुसूचित का प्रयोग किया गया जिनमें भौतिक सुविधाएं, सुरक्षा, शैक्षिक व खेल सामग्री पूर्व विद्यालय स्टाफ व पूर्व विद्यालय कार्यक्रम की तुलना एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्देशित निम्नतम आवश्यकताओं के आधार पर की गई। निष्कर्ष निकला कि समयावधि एवं निर्देश माध्यम को छोड़कर अधिकतर शासकीय व अशासकीय पूर्व विद्यालायों में भी निर्देशित न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं पायी गई।